एक, दो, तीन...

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
: अशोक राजपथ, पटना, (बिहार)

मूल्य : ₹30
संस्करण : 2011
अनुवादक : मदनलाल 'मधु'

ISBN : 978-93-5000-550-7

Ek Do Teen

शहद बहुत मीठा फूलों का
पर काटें मधु-मक्षिकायें
वह क्यों पीड़ा से घबराये
जब मधु खाने को मन ललचाये!

हरी घास में गुबरैले ने भिन भिन की
टिड्डे ने भी फौरन तभी कमानी ली।
कितना है संगीत हमारे चारों ओर!
धा-धी-धिन्ना, धा-धी-धिन्ना सन्ध्या-भोर!

मेढकियाँ ये
वन-जंगल के सिरे-सिरे
चलीं-चलीं।
चलते-चलते
पकी बेरियाँ उन्हें मिलीं।

अच्छा है जंगल में जीना
सुबह-सवेरे शबनम पीना।
बस थोड़ा-सा फूल झुकाओ
शबनम पीकर प्यास बुझाओ!

आया पवन झकोरा आया
फूल घास में हिला-हिलाया।
हुई हवा की सर सर सर
गये सभी ये खरहे डर।
देखो, कैसे कान उठाये
डरे हुए, दीदे फैलाये।

ये चारों बत्तख़ के बच्चे
झपटा चाहें गुबरैले पर
वह तैयार, सींग फैलाये,
देखें, कौन झपटता किस पर!

बेशक रोयोंवाला तन
किन्तु चुका मैं मुगर्भा बन।
बेशक मैंने साँप न मारा
पर मैं जीता, औ' यह हारा।

कौवे के बच्चे के ऊपर
हेलीकाप्टर करता घर-घर।
पर वह बैठा है मुँह बाये
शायद मुँह में मक्खी आये।

चिड़ियों के बच्चे आपस में उलझ पड़े
बेमतलब ही वे लड़कों सम लड़े-भिड़े।
पर कुछ क्षण में बन्द हुई हाथापाई
अपनी मूर्खता पर उन्हें, हँसी आई।

देखो तो बैठा है मछुआ
पर उदास होता है मछुआ
वह तो मछली पाना चाहे
मगर केकड़ा फँसता जाये,
मछली उसको नजर न आये।

टोपीवाला छत्राक सुन्दर
यह ही छतरी, यह ही घर।

मैं तो सरपट दौड़ लगाता
मनमजर्भी से आता-जाता।
अपनी चारों टाँगों के बल
मैं तो जैसे पक्षी चंचल।

वैसे तो हैं ये भी घोड़े
पर ये क़द में छोटे रहते
इसीलिए तो इनको हम सब,
टट्टू कहते।

बत्तख़ के बच्चे आपस में
बाँट रहे हैं अपना खाना
काँटे-छुरी नहीं हैं, इनको
ढंग यही पड़ता अपनाना।